संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य लक्षण का समीक्षात्मक अध्ययन

रश्मि मिश्रा

शोधच्छात्रा संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

आर्य सभ्यता के उषाकाल से ही विचार एवं भाव सम्प्रेषण में वाणी का वैशिष्टय प्रदर्शित होने लगा था। मानव सभ्यता की काव्यात्मक अभिव्यक्ति के रूप में वेदों का आधार निःसन्देह है। वेद स्वयं में काव्य हैं अथवा वेदों में काव्य है, प्रारम्भ से ही यह विचारणीय विषय रहा है। वेद और काव्य का नितान्त अन्तर्सम्बन्ध सर्वस्वीकार्य एवं सर्व ग्राह्य है। वेद सम्पूर्ण भारतीय मनीषा के आदि स्रोत हैं। वे सम्पूर्ण भारतीय विद्याओं के उत्पत्ति के मूल हैं। विविध दर्शन, यज्ञ मीमांसा, काव्य, नाटक, स्थापत्यकला, संगीत एवं अन्य समस्त कला निःसृत है किसी भी विद्यां के लिये बनाये गये सिद्धान्त ही शास्त्र हैं। अतएव वेदोत्तर काल से ही महान आचार्यों ने विविध विद्याओं के नियमन, निर्देशन एवं अनुशासन हेतु विविध शास्त्रों का प्रणयन किया उन्हें ही तद्रविद्या विषयक शास्त्र कहा गया। काव्य शास्त्र के सम्बन्ध में भी यही तथ्य स्वीकृत है। यद्यपि काव्य वेद निःसृत है तथापि आचार्य राजशेखर ने दैवी काव्योत्पत्ति का निरूपण किया है। वैदिक संहिताओं, बाह्मण ग्रन्थों आरण्यकों में अनेक काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का प्रचुर उल्लेख मिलता है। जो पश्चातवर्ती आचार्यों के लिए आधार स्तम्भ सिद्ध हुआ। इस प्रकार समय एवं विशेष परिवेशगत परिस्थितिओं में अनेकानेक आचार्यों एवं उनकी काव्यशास्त्रीय मान्यताओं, सिद्धान्तों ने काव्यशास्त्र को निरन्तर पल्लवित पुष्पित किया जो अद्यावधि पर्यन्त जारी है, विकास के इसी क्रम में आचार्य भामह, आचार्य रूद्रट ने अलंकार सम्प्रदाय, आचार्य वामन आदि ने रीति, आचार्य क्षेमेन्द्र ने औचित्य, आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति, आनन्दवर्धन ने ध्वनि, भरतमुनि तथा व्यास ने रस सम्प्रदाओं की काव्यशास्त्रीय स्थापनायें की। काव्यशास्त्र के आदि स्वप्न दृष्टा आचार्यों ने काव्य के स्वरूप लक्षण को व्यक्त करने हेतु विराट चिन्तन किया है। प्राक् आचार्यों ने सर्वप्रथम काव्य की आत्मा को खोजने की वृहद चेष्टा की। बौद्धिक मंथन के परिणाम स्वरूप भिन्न–भिन्न आचार्यों ने भिन्न–भिन्न विचार दिये है। जिसमें उन्होंने रस अलंकार, रीति, वक्रोक्ति ध्वनि और औचित्य को आत्मतत्व स्वीकार कर तत्स्वरूप ही काव्य लक्षण प्रस्तुत किया।

काव्य स्वरूप के प्रतिपादन में प्राक्काल से ही प्रायः दो विचारधारायें दृष्टिगत होती हैं। उनमें व्यास, दण्डी, जयदेव एवं पण्डितराज प्रभृति अनेक आचार्य शब्द को काव्य मानते हैं तो भरत, भामह, वामन, रूद्रट, आनन्दवर्धन, राजशेखर आदि आचार्य शब्द– अर्थ उभय की समष्टि को काव्य मानते हैं। आचार्य भरत गुढ शब्द एवं गुढ अर्थ से रहित तत्त्व को काव्य मानते हैं उससे यह स्पष्ट है कि आचार्य

Scanned with CamScanner

भरत शब्दार्थ समष्टि को काव्य मानने के पक्ष में हैं। महर्षि व्यास के अनुसार 'अभीष्ट अर्थ को संक्षिप्त रूप में प्रकट कर देने वाले पद समूह को काव्य कहते है।'[1]

दण्डी के काव्यलक्षण पर व्यास का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है परन्तु यदि दण्डी के लाक्षणिक 'व्यवच्छिन्न' का तात्पर्य परिभाष्य– परिमापकत्व से हो तो काव्य में शब्द और अर्थ की समान स्थिति हो जाती है।[2] सर्वप्रथम आचार्य भामह ने सुस्पष्ट रूप से शब्द और अर्थ के सहितभाव को काव्य कहकर अपना मन्तव्य व्यक्त किया।[3] आचार्य वामन अलंकार को काव्य का अनित्य धर्म स्वीकार करते हुये रीति अथवा गुण को ही काव्य की आत्मा स्वीकार करते हैं।[4] आचार्य कुन्तक शब्द अर्थ को काव्य स्वीकार करते हैं किन्तु वक्रोक्ति को काव्य का जीवित बताते है।[5]

आचार्य मम्मट ने भामह से लेकर अपने समकालीन सभी आचार्यों के काव्यलक्षण का समन्वय करने का उल्लेखनीय प्रयास किया है। उनके अनुसार दोषहीन सगुण एवं सालंकार शब्दार्थ युगल को काव्य कहते है।[6] मम्मट ने रस के अपकर्षक तत्त्वों को दोष कहा है। ये ही मुख्य दोष हीनता ही उन्हें काव्य में मान्य है। क्षुद्र दोष के कारण काव्य पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। यद्यपि मम्मट के काव्य लक्षण की काव्यशास्त्र जगत में अत्यधिक आलोचना हुई। जहाँ कविराज विश्वनाथ विशेषणांश पर आपत्ति उठाई तो पण्डितराज जगन्नथ ने विशेष्यांश पर गहनदृष्टिपात् से यह प्रकट होता है कि मम्मट से परवर्ती आचार्य हेमचन्द्र[7] विद्यानाथ एवं वाग्भंट[8] ने मम्मट के ही काव्यलक्षण को ही पूर्णतः स्वीकार कर लिया।

कविराज विश्वनाथ ने रस की सत्ता को स्वीकार करते हुये शब्दार्थ युग्म के स्थान पर 'वाक्य' में काव्यत्व स्वीकार किया है[9] वहीं पण्डित राज जगन्नाथ ने सुस्पष्ट रूप से शब्द को ही काव्य माना है उन्होंने प्राचीन आचार्यों के शब्दार्थ समष्टि में काव्यत्व का समावेश करते हुए रमणीय अर्थ की प्रतिपत्ति कराने वाले शब्द को काव्य कहा है।[10] काव्यलक्षण की यह परम्परा आधुनिक काव्यशास्त्रीय आचार्यों में भी प्राप्त होती है, जिन्होंने अपने–अपने मतव्य को व्यक्त किया है। आधुनिक काव्य शास्त्रियों में मान्य हस्ताक्षर है आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी जिन्होंने काव्य लक्षण के सन्दर्भ में दार्शनिक पृष्ठभूमि को रेखांकित किया है उनकी मान्यता में काव्य स्थूल नहीं है अपितु भावनात्मक या ज्ञानात्मक है, इस प्रकार काव्य ज्ञान रूप है और शब्द ज्ञान वाह्य है अर्थात् शब्द उसके अन्तर्गत नहीं आता है[11] उनका कहना है कि जिस प्रकार पेय रस के लिये कोई पात्र मात्र विधि के लिये होता है उसी प्रकार शब्द ज्ञान काव्य की उपाधि मात्र है।[12]

वहीं डॉ0 ब्रह्मानन्द शर्मा काव्य में सर्वथा नवीन तत्व का प्रतिपादन करते हैं वह है सत्य, उनका कथन है कि सत्य सभी के लिये अभीष्ट होता है और काव्य में भी सत्य विद्यमान होता है। सत्य में सूक्ष्मता का समावेश होने से प्रभावकारिता उत्पन्न होती है और यही प्रभावकारिता काव्य में चमत्कार कही जाती है।[13] इसी कम में अभिराज राजेन्द्र मिश्र का काव्यलक्षण के सम्बन्ध में उनका मत है 'लोककोत्तर आख्या ही काव्य है जो रसगर्भ (रसात्मक) हो, स्भावण हो तथा इहलोक– परलोक दोनो में सहजरूप से यशः प्राप्ति रूपी प्रयोजन वाला हो[14]

Scanned with CamScanner

इस प्रकार प्राचीन काल से आधुनिक काल पर्यन्त काव्यशास्त्र की यह धारा निरन्तर प्रवाहमान है और आगे भी रहेगी जिसमें भिन्नरूचिहिभीः विहदगण अपने विचार प्रवाह को प्रवाहित करते रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संक्षेपाद् वाक्य मिष्टार्थ व्यवच्छिन्नापदावली (अग्निपुराण–337/6)
2. शरीर तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।।(काव्यादर्श पृ09)
3. शब्दाथौसहितौ काव्यं (काव्यलकांर 1.16)
4. रीतिरात्माकाव्यस्य (काव्यलकांर सूत्राणि पृ 14)
5. शब्दार्थौसहितौ वक्र कविव्यापारशालिनि। बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि।। वक्रोक्ति जीविति(पृ0 17)
6. तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृतीः पुनः क्वापि।(काव्यप्रकाश पृ 19)
7. अदौषौं सगुणौ सालकांरौ च शब्दार्थौ काव्यम्। (काव्यानुशासनम् पृ0 19)
8. शब्दार्थौनिर्दोषौ सगुणौ प्रायः सालडकारौ काव्यम्।(वाग्भटालड़कार)
9. वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (साहित्यदर्पण पृ023)
10. रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम (रसगंगाधर पृ0 13)
11. काव्यस्य ज्ञानरूपत्वे शब्दत्वं नोपपद्यते। (काव्यलड़कारकारिका पृ0 114)
12. ज्ञानात्मको पि शब्दः स्यादुपाधि काव्यवर्ष्मधि। पात्रंरसे पानकाख्ये
13. शब्दस्यैकं कार्यमस्ति स्वाच्चारणरूपतया प्रस्तुतभावानुकूलम् कठोरता कोमलादिकस्य प्रस्तुतिः अपरचं कार्यमस्ति अर्थद्योकता। किंच काव्येडर्थद्योतनानन्तर नहि शब्दस्य पृथग्भावोडपितु काव्यानुभूतौ तस्यमुहुर्मुहरूप स्थिति दिति नहि तस्य काव्याद् वहिभावः(काव्यसत्यालोक पृ0 15)
14. काव्यंलोकोतराख्यानं रसगर्भ स्वभावणम्।परत्रेह च निव्याणं यशोडवाप्ति प्रयोणनम्।।(अभिराजयशोभूषणम् पृ0 34)

Scanned with CamScanner